

ब़चिड़ी अभिराम (१३)

अखड़ियुनि जो आराम ब़चिड़ी अखड़ियुनि जो आराम ।
जंहिजो अमृत खां मिठो नाम ब़चिड़ी अखड़ियुनि जो
आराम ॥

कमल खां कोमल कुंवरी किशोरी कमलनि बनड़े ज़ाई
तपस्या मगनु मिठे बाबा खे मिली गगन मां वाधाई
परियां दिठी सुख धाम ब़चिड़ी ॥१॥

आनन्द ऐं अनुराग सां बाबल गुलिड़ी गोद खई
अंग अंग मां झलिके जंहिजे जग मग जोति नई
लावण्य ललित लालम ब़चिड़ी ॥२॥

निधी लिवाए आंचल में बाबा डुकंदो अंडण में आयो
कीरति नैन निहारे मुखड़ो जन्म सफलु पंहिजो भांयों
उमंग सां वती अभिराम ब़चिड़ी ॥३॥

नयन न खोले नंढिड़ी नींगरी पिया दरस जी प्यासी
मातु पिता मन व्याकुल थियड़ा दिलि में भरी उदासी
जतन कयाऊं जाम ब़चिड़ी ॥४॥

भागनि सां आई अमड़ि यशोदा गोविंद गोद खणी
पालने वटि आयो रेहिड़ियूं पाए नेही नील मणी
खुलिया नेण निष्काम ब़चिड़ी ॥५॥

घर घर में थी मंगल वाधाई खुशियुनि जी खाणि खुली
देव कन्याऊं नभ मां आयूं तन मन सुरति भुली
गाइनि मधुर गुण ग्राम ब़चिड़ी ॥६॥

मैगसि मैया दियण वाधाई कीरति घरड़े आई
कुंअरि किशोरी खणी गोद में गलिड़े सां लपटाई
चई जै जै श्यामा श्याम ब़चिड़ी ॥७॥